पाँचवाँ अध्याय

निर्मल वर्मा के उपन्यासों में आधुनिकता बोध

निर्मल वर्मा के उपन्यासों में आधुनिकता बोध

विषय प्रवेश

निर्मल वर्मा आधुनिक हिन्दी उपन्यास के एक सशक्त रचनाकार हैं। निर्मल वर्मा हमें नागरिक समाज के, शहरी लोक समाज के सर्वप्रथम महत्वपूर्ण स्वतंत्र लेखक और चिंतक लगते हैं। वे पाश्चात्य देशों में रहे हैं और वहाँ के साहित्य से अधिक अवगत हैं। हिन्दी में विश्वव्यापी ख्याति जितनी निर्मल वर्मा को मिली, उतनी किसी अन्य लेखक को नहीं। उन्होंने पात्रों की मानसिकता में गहराई में प्रवेश कर उसे शब्दों में पकड़ लाने का अभिनव प्रयोग किया है। उन्होंने हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में पहला कदम रखा सन् 1964 में।

निर्मल वर्मा का पहला उपन्यास 'वे दिन' 1964 में लिखा गया - जिसे हिन्दी के उपन्यास साहित्य में महत्वपूर्ण मोड़ कहा गया था- "यदि 'गोदान' को हिन्दी उपन्यास का पहला मोड़ मान लिया जाए तो 'शेखर एक जीवनी' इसका दूसरा मोड़ है और 'वे दिन' उसका तीसरा मोड़ होने की गवाही देता है।"[1] 'वे दिन' उपन्यास अपनी नवीन संवेदना और आधुनिकता प्रस्तुत करता है। इसी कारण इस उपन्यास की महत्ता सिद्ध करते हुए इंद्रनाथ मदान कहते हैं कि- "समकालीन उपन्यास की शुरूआत अगर 'वे दिन' से की जाए तो असंगत न होगा।"[2] अकेलेपन का बोध और अजनबीपन की पीड़ा की अभिव्यक्ति इस उपन्यास में है।

निर्मल वर्मा का दूसरा उपन्यास है- 'लालटीन की छत'। इस उपन्यास को 1970 से 1974 तक चार वर्षों में कभी लंदन, कभी दिल्ली, कभी शिमला में लिखा। इसमें एक किशोर लड़की काया के शारीरिक परिवर्तन और परिवेशगत स्थितियों की रहस्यमयता उभरती है। आगत यौवन का आकर्षण, अकेलापन, भोलापन, आतंक और भ्रम का ताना-बाना लेकर रचा गया यह उपन्यास अनुभूतियों संवेदनाओं और कलात्मकता का अद्‌भुत संयोजन लिए हुए हैं।

तीसरा उपन्यास 'एक चिथड़ा सुख'(1979) थियेटर के सम्मोहन में खोए कुछ युवक-युवतियों की कथा है। इस उपन्यास के पात्रों को नाटक और असली ज़िंदगी में कोई अंतर नहीं दिखाई देता; यानी नाटक और जीवन की भूमिका आपस में इतनी घुलमिल गयी है कि उसे अलग करना या अलग होना गलत लगने लगता है। "इस उपन्यास में निर्मल वर्मा एक अनजान लेकिन बेहद प्रिय, मोहक व मोहित संसार निर्मित कर लेते हैं।"[3] यह उपन्यास मध्यवर्ग के बुद्धिजीवी वर्ग से जुड़ा है और दिल्ली में घटता है।

निर्मल वर्मा उन विरले कथाकारों में से है जो मानव को शेष सृष्टि के अनंत विस्तार से जोड़कर देखते हैं। उनके पात्रों का मंथन इसी सच की रचना में साक्षी है। निर्मल वर्मा का चौथा उपन्यास 'रात का रिपोर्टर' 1989 में आया। 'रात का रिपोर्टर' व्यवस्था और स्वतंत्रता की परस्पर विरोधी अभिव्यक्ति से युक्त है, जो आधुनिक युग की मूल समस्या है जिसमें आज की राजनीतिक विसंगतियों के शिकार बुद्धिजीवी रिपोर्टर रिशी के चेतना पर पड़ने वाले युगीन

दबावों की कथा कही गयी है। वास्तव में 'रात का रिपोर्टर' आपातकाल के वातावरण का आतंकमय उल्लेख है; बाहरी राजनीतिक दबावों और मानसिक अंतर्द्वंद्व से युवा वर्ग के खंडित होते व्यक्तित्व की व्यथा का चित्रण इसमें है।

निर्मल वर्मा का पाँचवाँ उपन्यास 'अंतिम अरण्य' (2000) एक विशिष्ट फॉर्म का प्रयोग है। उपन्यास की केंद्रीय चिंता मृत्यु, अकेलापन, बीत जाने का अवसाद, एलीट बुज़ुर्गों का अवसाद और अतीत-स्मृतियों से जुड़ी चिंता है। यह उपन्यास जीवन और मृत्यु के प्रश्नों से जूझता है। बूढापे और मृत्यु से जुड़ी उसकी संवेदनाओं का अंकन उपन्यास का मूल विषय है। मृत्यु की छाया पूरे उपन्यास पर भले ही दिखाई देती है, पर उपन्यास के पात्र मृत्यु से भयाक्रांत नहीं है। वे मृत्यु को सहजता से स्वीकार करते हैं।

निर्मल वर्मा के पाँचों उपन्यासों में देश की स्वतंत्रता के बाद देश की राजनीतिक परिस्थितियों के साथ बदलती हुई सामाजिक स्थिति और आधुनिक जीवन शैली में उभरते अकेलापन और अजनबीपन के हावी हो जाने से व्यक्ति संबंधों में गहराती आत्मीयता के टूटन का उल्लेख लिए हुए हैं। निर्मल वर्मा ने अपने समय और अपने समय की कला को बदलने की महत्वपूर्ण कोशिशें की थीं। बहुत कम लेखक ऐसे होते हैं जो अपनी रचनाओं के माध्यम से अपने निजी संसार को गढ़ने की आकांक्षा रखते हैं और उनमें भी ऐसे बहुत कम लेखक होते हैं जो अपने इस स्वप्न को जी पाते हैं। निर्मल वर्मा निश्चय ही उन रचनाकारों में आते हैं।

मानवीय संबंधों का टूटन, अकेलापन, मृत्युबोध, महानगर बोध, अस्तित्व की तलाश जैसी अनेक आधुनिक विचारधारा की विशेषताएँ निर्मल वर्मा के उपन्यासों में द्रष्टव्य हैं। उनके उपन्यासों का समग्र अध्ययन निम्नलिखित आधुनिक साहित्यिक प्रवृत्तियों के आधार पर किया जाएगा :-

5.1 मानवीय संबंधों की टूटन

निर्मल वर्मा की कथाओं में मानवीय संबंधों की गहरी बुनावट मिलती है। निर्मल वर्मा जिस उपन्यास संसार की सृष्टि करते हैं, वहाँ पर पारिवारिक टूटन, घुटन, अलगाव, उदासीनता तथा तनाव के ताने-बाने गहराते हैं। उनके सभी उपन्यासों में दांपत्य संबंधों में टूटन ही दिखाई देती है। 'वे दिन' उपन्यास नर नारी संबंधों के बदलाव की आधुनिक मनःस्थितियों का भीतरी दस्तावेज़ है।

'वे दिन' में रायना और उसके पति जाक के संबंधों की जड़ता ऐसी बढ़ती है कि वे एक दूसरे के लिए असह्य हो जाते हैं। रायना जाक से अलग हो जाती है। रायना का कथन है- "हम दोनों अब भी किसी कान्सन्ट्रेशन कैम्प में रह रहे हैं... एक ही घर में। उसके बाहर जाक... वह जीवित नहीं था... मैं भी नहीं। हम सिर्फ़ उसमें रहकर जी सकते थे... लेकिन मैं नहीं रह सकी। एक दिन में बाहर आ गयी... यह जानते हुए भी कि बाहर मैं किसी काबिल नहीं रह गयी हूँ... नॉट ईवन फार लव... फिर वह चुप हो गयी।"[4] युद्ध और मृत्यु से जीवन में पैदा होनेवाले निरर्थकता और निस्संगता आधुनिकता बोध की पहचान है।

आधुनिक मानसिकता पारिवारिक संबंधों, संबंधों की भावात्मकता, आत्मीयता आदि को प्रायः नष्ट कर देती है। इस युग में आर्थिक वैषम्य, नयी पुरानी मान्यताओं का संघर्ष, अंधविश्वास, परंपराओं का विघटन, समाज संस्कृति के बदलते रूप समाज पर अपना प्रभाव डाल रहे थे। माता-पिता के अलग हो जाने पर इनके बच्चे छोटी उम्र में ही किसी एक के साथ रहने पर मज़बूर हो जाते हैं। एक सामान्य नारी के जीवन में इससे बढ़कर त्रासदी क्या हो सकती है कि युवावस्था में ही वह पति से अलग हो गई है। दोनों के बीच एक बच्चा है पर जिसके भविष्य का निश्चय नहीं। इस स्थिति का उपन्यास में कुछ ही पंक्तियों के सहज संवाद में, चित्रण इस प्रकार हो गया है-

"कुछ देर बाद उसने कहा, हम अलग हो गये हैं। उसे शायद यह भी नहीं मालूम की मैं मिता के संग प्राग आयी हूँ।"

"मीता आपके पास ही रहता है?"

"हमेशा नहीं। हम उसे बाँट लेते हैं।" वह धीरे से हँस पड़ी, पिछले साल छुट्टियों में वह जाक के संग था। 'कैसा निश्चय?'

"आखिर कभी-न-कभी उसे हममें से एक के साथ रहना होगा।"[5] उस बालक के मन की स्थिति क्या रही होगी जो कभी पिता के साथ रहता है और कभी माँ के पास? उसका संबंध अलग-अलग इन दोनों से तो कुछ है, किंतु वे दोनों आपस में अजनबी हैं। इस अजनबीपन के बीच प्यार की प्यासी आकांक्षा लिए वह निरीह बालक कितना दयनीय हो सकता है।

ऐसे संबंधों से कटा जीवन चौंकाने और घबरा देने वाला है। पुत्र भी मानो, मन ही मन, माँ के उखड़ेपन से अनजान नहीं। रायना का बेटा मीता चुप रहता है लेकिन वह जानता था कि रायना ने पिछली रात इंदी के साथ गुज़ारी थी। - "वह जान गया है"...कल रात मैं तुम्हारे कमरे में रही थी...

"कुछ नहीं। वह पहले से जानता था।"[6]

'एक चिथड़ा सुख' में नित्ती और उसकी पत्नी के बीच संबंधों की आत्मीयता खण्ड-खण्ड हो जाती है। एक छत के नीचे रहते हुए दोनों के बीच बहुत कम संवाद होता है। नित्ती भाई अपने और अपने परिवार और इरा के बीच(प्रेमिका) सामंजस्य नहीं बिठा पाते । यह बात बिट्टी से हुई बातचीत से स्पष्ट हो जाती है "तुम क्या सचमुच उसे प्यार करते हो?"

"तुम क्या सोचती हो?"

"मैं सोचती हूँ- तुम कुछ करते क्यों नहीं?"

"बिट्टी तुम्हें सब कुछ आसान लगता है।"

"अपने बच्चे को छोड़ना... या अपनी पत्नी का"

"तुम्हें कुछ नहीं मालूम... तुम अपने से बाहर कुछ भी नहीं देखती।"

"मुझे इतना मालूम है, वह कितना तड़पती है।"[7] नित्ती भाई आर्कीटेक्ट हैं और लंदन से यहाँ आए हैं। वे दिल्ली में अपनी पत्नी और बच्चों के साथ रहते हैं। ईरा विदेश से अपने प्रेमी नित्ती भाई के पीछे हिंदुस्तान आई है। नित्ती भाई ईरा और पत्नी के मध्य झूलते हुए अपना जीवन जी रहे हैं।

'रात का रिपोर्टर' उपन्यास भी मानवीय संबंधों की टूटन की कथा है। रिपोर्टर रिशी और उसकी पत्नी उमा के संबंध रिक्त हो चुके हैं और वह पत्नी के बजाय प्रेमिका पर केंद्रित हो जाता है। उसे अपनी अस्वस्थ पत्नी के प्रति कोई संवेदना नहीं है। स्थिति इतनी विषम है कि रिशी से डॉक्टर ने साफ कह दिया किः- "आप समझते क्यों नहीं! कोई भी चीज़ जो उन्हें आपकी याद दिलाएगी, उनके लिए घातक होगी। वह चाहे आप हों, या आपका घर..."[8] यह निश्चित ही ऐसी दारुण स्थिति है जो नारी अस्मिता पर प्रहार करती है तथा दांपत्य संबंधों के साथ साथ पारिवारिक संबंधों के विघटन, आत्मीयता के अभाव और संबंधों में गहराती उदासीनता का वृत्त प्रस्तुत करती है।

'रात का रिपोर्टर' में बिंदु और रिशी के प्रेम संबंध भी कुछ विचित्र से हैं। वह बिंदु से स्थायी संबंध तो स्थापित करना चाहता है, परंतु अपनी पारिवारिक स्थिति के कारण वह वैसा कर नहीं पाता है। वह बिंदु को आत्मीयता के, प्रेम के बंधन में जकड़ लेना चाहता है परंतु बिंदु को अपने दुःख में सम्मिलित भी नहीं करता। रिशी कहता हैः- "तुम मेरे परिवार के दुखडों में मत पड़ो; उनका अंत कहीं नहीं है।"[9]

निर्मल वर्मा 'एक चिथड़ा सुख' में यह भी दिखाते हैं कि 'बिट्टी' का अपने परिवारवालों के प्रति अधिक लगाव नहीं है और जो है वह औपचारिक है क्योंकि वह घरवालों से दूर दिल्ली में अपने थियेटर के संसार में ही खोई रहती है। 'बिट्टी' मुक्त जीवन जीने की तमन्ना से भरी दिल्ली में रहती है। बिट्टी अपना घर सिर्फ इसलिए छोड़ आयी है कि वह अपनी निज की पहचान

बनाना चाहती है- "वह एक ऐसी जगह चली आयी थी, जहाँ इलाहाबाद का घर था, वह बीच कमरे में खड़ी थी, चाचा गुमसुम-से खड़े उसे ताक रहे थे, चाची कोने में बैठी रो रही थीं और उसे आश्चर्य हुआ कि बिट्टी चाची के आँसुओं को नहीं, अपने पिता के सुन्न चेहरे को देख रही थी... फिर उसने अपना सूटकेस उठाया और बाहर चली गयी, घर के बाहर स्टेज पर...।"[10]

'एक चिथड़ा सुख' की दूसरी पात्र इरा भी अपने माता-पिता के घर छोड़कर इंग्लैण्ड से दिल्ली आकर रह रही है। "तुम जब हिंदुस्तान आयी थी, तो कितना कुछ करना चाहती थी। इंग्लैण्ड में अपना घरबार छोड़कर यहाँ आना... ऐसा कितने लोग करते हैं?"[11]

इसी प्रकार 'वे दिन' में कथावाचक निंदी के मन में भी अपने परिवार के प्रति आत्मीयता नहीं है। विदेश में रह रहे निंदी को बहिन का पत्र मिलता है तो पढ़ने के बजाय वह उसे जेब में रख लेता है। निंदी बताते हैं कि:- "फिर दूसरा पत्र... जिसके पीछे मेरी बहन थी, घर था, घर के कोने थे... मैंने उसे दुबारा जेब में रख दिया। उस रात मैं वहाँ नहीं जाना चाहता था।"[12] पत्र का इस प्रकार जेब में रख लेना पारिवारिक और आत्मीयता के संबंधों के प्रति उसके मन की जड़ता, उदासी तथा संबंधों की ऊष्माहीनता की परिचायक है।

'अंतिम अरण्य' के मुख्य चरित्र- उम्र के अंतिम पड़ाव में आ चुके एक वृद्ध-मेहरा साहब है। वे अपनी पत्नी दीवा के साथ निर्जन पहाड़ी कस्बे में जीवन बिता रहे हैं। डॉ.तिया मेहरा साहब की बेटी है। संबंधों की निस्सारता

को अनुभव में लिए हुए मेहरा साहब निस्संग हो चुके हैं। बिटिया की चिट्ठी आने की खबर सुनने पर उनका यह निस्संग भाव यहाँ पर व्यक्त है-

"वह जाने लगे तो मैंने कहा- "बिटिया की चिट्ठी आई है..."

"तिया की?" वह दरवाज़े पर ठिठक गए, "क्या लिखा है?"

"आपके बारे में पूछा है.."

"मेरे बारे में?" एक शुष्क-सी-हँसी चेहरे पर चली आई।...

"रात को आओगे, तो साथ ले आना।" कुछ और नहीं पूछा। दरवाज़ा खोलकर भीतर चले गए।"[13]

'अंतिम अरण्य' की दूसरी पात्र 'तिया' भी अपने माता पिता के स्नेह से वंचित रही है और अपने आप में है। तिया बीच-बीच में कुछ दिनों के लिए मेहरा साहब के पास आती है फिर भी वह इस घर को अपना घर नहीं समझती-

"मैं होश में हूँ अन्ना जी... इतना होश में हूँ कि समझ में नहीं आता, मैं यहाँ क्यों हूँ, क्यों बार बार लौट आती हूँ।"

"क्या बात करती हो... यह तुम्हारा घर है... यहाँ नहीं आओगी, तो और कहाँ जाओगी?"

"मेरा घर... कौन सा घर? ...आपको तो मालूम है... मैंने अपने को पराए घर की सीढ़ियों पर पाया था... उसे आप मेरा घर कहती हैं?"[14] तिया की मनोदशा का उपर्युक्त पंक्तियाँ सच्चा बिंब सामने लाती हैं।

निर्मल वर्मा ने अपने उपन्यासों में मध्यवर्गीय पारिवारिक संबंधों में आये उदासीनता, टूटन, अजनबीपन एवं बिखराव को निर्ममता के साथ प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यास 'रात का रिपोर्टर', 'वे दिन' और 'एक चिथड़ा सुख' सभी में दांपत्य संबंधों के साथ-साथ पारिवारिक संबंधों के विघटन, आत्मीयता के अभाव और संबंधों में गहराती उदासीनता का चित्रण अलग ढंग से हुआ है।

5.2 अकेलापन

अकेलापन बीसवीं शताब्दी के साहित्य के केंद्रीय तनावों में प्रमुख रहा है। समकालीन मनुष्य का भयावह अकेलापन निर्मल वर्मा के लेखन के केंद्र में रहा है। निर्मल वर्मा की रचनाओं का संबंध आधुनिक जीवन से है, खासकर इसके अकेलापन से। अकेलापन की पीड़ा झेलना और उससे सम्मोहित भी रहना एक अनोखी आधुनिक स्थिति है।

औद्योगिक समाज में आधुनिकता का उत्पीड़न कई रूपों में सामने आता है, जिसमें एक है मनुष्य का अकेलापन। यह अकेलापन ही निर्मल वर्मा की केंद्रीय चिंता है। इस अकेलेपन में उनके पात्र भीड़ में या घर में, अकेले कमरे में या पब में, पार्क में या अस्पताल के कमरे पर अपने अकेलेपन से जूझते हैं। स्थिति की भयावहता तो यह है कि व्यक्ति को एक दूसरे के साथ रहते हुए भी अपने अकेलेपन की नियति झेलना अनिवार्य-सा लगता है।

'वे दिन' का अकेलापन, अजनबीपन और अलगाव-बोध उस परिवेश की देन है जहाँ युद्धोपरांत शांति के दिनों में भी युद्ध की परछाइयाँ पात्रों का पीछा नहीं छोड़तीं। अकेलेपन की संवेदना को अभिव्यक्त करनेवाला यह उपन्यास निर्मल वर्मा के उन अनुभवों का लेखा-जोखा है जो उन्होंने विदेशों में रहकर वहाँ के परिवेश को आत्मसात् करके प्राप्त किये हैं। इस उपन्यास में सभी पात्र अकेलापन भोगने के लिए बाध्य हैं यद्यपि वे एक दूसरे का अकेलापन बाँटने का प्रयास करते हैं।

'वे दिन' उपन्यास की राइना और इंदी के बीच का अकेलापन इतना गहरा है कि दैहिक मिलन के क्षणों में भी वे एक दूसरे के न रहकर अकेलेपन भोगते हैं। तभी "हम दोनों अँधेरे में सहसा अकेले हो गये थे... अकेलापन- जो दुख, पीड़ा, आँसुओं से बाहर हैं।"[15] यहाँ निर्मल वर्मा ने यह संकेत दिया है कि महज़ दैहिक खालीपन को भरना काफी नहीं है । आत्मा का खालीपन प्रेम और स्नेह से भरना है । आज के जीवन की त्रासदी यह है कि प्रेम का स्रोत सूख गया है।

'वे दिन' के सभी पात्र अकेलेपन से त्रस्त और क्षणों में जीते हैं। क्षणों में जीने के बाद उन्हें मालूम है कि उन्हें फिर अकेलापन सहना है- भोगना है- "तीन दिन, तीन वर्ष... समय कुछ भी मानी नहीं रखता- अगर हम एक सुलगते क्षण में अँधेरे के बीच उस ताप को पकड़ सकें... यह जानते हुए भी कि वह जीवित नहीं रहेगा और यह जानते हुए भी कि उसके बुझने के बाद हम फिर दुबारा अपने-अपने अंधेरे में ठिठुरने लगेंगे।"[16] क्षण की महत्ता को यहाँ

उभारा गया है। कितना ज़बरदस्त बिंब निर्मल वर्मा ने प्रस्तुत किया है- अँधेरे में ठिठुरना।

'वे दिन' में ऊपर से देखने पर रायना का अकेलापन उसका स्वयं का चुनाव लगता है, लेकिन वास्तविकता यह है कि इस चुनाव के पीछे स्थितियों की क्रूर विवशताएँ हैं। रायना तनाव की स्थिति में जी रही है। उसका जीवन एकाकीपन से खलता है। इस अकेलेपन से छुटकारा पाने केलिए वह तीन दिनों की दोस्ती के मध्य इंदी से शारीरिक संबंध बना लेती है । इंदी के बीच बातचीत में रायना बताती है-

"क्या तुम्हारे संग अकसर ऐसा होता है... दूसरे शहरों में?"

"हाँ... होता है। मैं ज़्यादा दिन अकेले नहीं रह सकती..."[17]

टी.टी, मारिया, फांज आदि 'वे दिन' के सभी पात्र अपने अपने भीतर अकेले हैं और अकेलेपन का बोझ लदा हुआ है। यह बोझ इतना ज़्यादा कि प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से अपरिचित अजनबी जैसा व्यवहार करता है, उसका परिचय मात्र इतना है- "हम सिर्फ एक दूसरे को इतनी सीमा तक जानने लगे थे जहाँ यह पता चल जाता है कि तुम दूसरे की मदद नहीं कर सकते"[18] यह स्थिति भयंकर है कि एक दूसरे को जानने के बाद भी अकेलापन न बांट सके।

'एक चिथड़ा सुख' में भी मूलतः अकेलापन, अलगाव-बोध और अजनबीपन की ही समस्या है। इस उपन्यास में यह समस्या कुछ अलग ढंग से उभरी है। इसमें सभी पात्र अकेले हैं किंतु उनका अकेलापन परिस्थितियों की

क्रूरता के कारण नहीं है बल्कि ये लोग कुछ करने या बनने की धुन में अपने परिवारों को छोड़ आए हैं, दूसरे शब्दों में यह भी कह सकते हैं कि अपने जीवन में सार्थकता की तलाश ने उन्हें अकेला बना दिया है। इस उपन्यास के पात्रों के अंत-संबंध भी इसी प्रकार के हैं। प्रत्येक पात्र का अपना दुःख है जो उसे अलग किए हैं।

'एक चिथड़ा सुख' में इरा और नित्ती भाई, बिट्टि और डैरी एक दूसरे से जुड़े होने पर भी अलग है- इनका अकेलापन अपने अस्तित्व की पहचान से जुड़ा हुआ है। बिट्टी कभी-कभी उखड़ी सी दिखाई देती है। मुन्नु के अनुसार- "वह कभी-कभी मुँडेर पर घण्टों खड़ी रहती... कुछ लोग अपने अकेलेपन में काफी संपूर्ण दिखाई देते हैं- उन्हें किसी चीज़ की ज़रूरत महसूस नहीं होती।"[19]

'एक चिथड़ा सुख' के सभी पात्र एक दूसरे का प्रेम पाना चाहते हैं। वे अपने आपसे संघर्ष करते हैं। पूरा उपन्यास प्रेम संबंधी घुटन और अकेलापन की समस्या को उद्घाटित करता है और अकेलापन से मुक्ति पाना चाहते हैं। इस उपन्यास के पात्रों का अकेलापन मुन्नू ने यों व्यक्त किया है- "मुझे लगा, वे मुझे भूल-से गये हैं, जैसे मैं वहाँ हूँ ही नहीं; फिर मुझे महसूस हुआ कि जैसे वे एक दूसरे को भी भूल गये हैं। नहीं; भूले उतना नहीं, जितना खो गये हैं, असली का खोना नहीं, बल्कि ऐसा, जब हमें मालूम हो दूसरा कहाँ छिपा है और हम खोकर भी दूसरे के साथ जुड़े रहते हैं।"[20]

'एक चिथड़ा सुख' में बिट्टी के कज़िन मुन्नू का अकेलापन सबसे अलग है। बिट्टी के साथ बरसाती में भागीदार मुन्नू बिट्टी के मित्रों की भीड़ में उनसे बात करते हुए भी अपने आपमें अकेला रहता है और उसे अपनी डायरी में भरने का प्रयास करता है। "मैं आज देर से लौटूँगी, तुम खाना खाकर सो जाना। मेरा इंतज़ार मत करना। कागज़ की हर चिप्पी पर उसका एक खाली दिन चिपका रहता- उसके अकेलेपन का कैलेण्डर- जिसे वह अपने साथ इलाहाबाद ले जाना चाहता था।"[21]

'लाल टीन की छत' में एक किशोरी के युवती बनने के बीच के अंतराल की मनस्थितियों का वर्णन है। इसमें युवती के मन में मौजूद रहस्य, अकेलापन, आतंक, भोलापन आदि भावों का वर्णन है। काया जिस परिवार की है वह खुद अकेलापन से त्रस्त है। काया के पिता दिल्ली में रहते हैं और उन्होंने परिवार को एक पहाड़ी प्रदेश में रख छोड़ा है। माँ अपनी स्थिति के कारण अकेली रहना चाहती है। वह घर में रहकर भी रहना व्यर्थ समझती है और अकेलापन महसूस करती है- "दिनभर का अकेलापन, गुस्सा, तृष्णा, हताश आपस में गूँथकर एक धुन्ध का गोला सा बन जाते, जो न इतना कोमल होता कि वह उसकी पकड़ में आकर किसी सूझ, किसी समझदारी की सांत्वना में बदल सके।"[22]

काया को महसूस होता कि किसीको उसकी ज़रूरत नहीं, परवाह नहीं है अगर वह यहाँ से चली भी जाये तो कोई उसके बारे में नहीं सोचेगा, कोई उसकी कमी महसूस नहीं करेगा। एक अल्हड़ सी लड़की अपने अकेलेपन

से अभिभूत है, आतंकित है- "उसे भयानक सा ख्याल आता कि अगर वह पीठ मोड़कर उल्टी दिशा में चलने लगे तो भी उसे कोई नहीं बुलायेगा। अगर वह रात-भर अपने घर के सामने अंधेरे में खड़ी रहे तो भी किसीको उसका अभाव नहीं अखरेगा।"[23] उन दिनों काया ने पहली बार अपने अकेलेपन को साफ साफ अँधेरे में देखा था।

वस्तुतः 'लाल टीन की छत' में बूढ़ापे का अकेलापन भी और वयःसंधि का अकेलापन भी, उस व्यक्ति का अकेलापन भी जिसकी पत्नी मर चुकी है और उस औरत का अकेलापन भी जिसका पति मर चुका है। बूढ़ापे के असह्य दिनों में जोसुआ का अकेलापन नीरस ज़िंदगी को पीड़ा देता है। 'चाचा' के परिवार में सब लोग एकसाथ रहने पर भी वे अकेले हैं। वीरू अकेला है, चाचा अकेले हैं, नथवाली औरत अकेली है। काया को लगता है जैसे- "अकेलापन कोई बीमारी है, जो भीतर पनपती है, और बाहर से जिसे कोई नहीं देख सकता- न छोटे, न माँ, न मिस जोसुआ... हालाँकि माँ को सब देख सकते थे, उसे कोई नहीं।"[24] इस प्रकार यह स्वीकार करना होगा कि निर्मल वर्मा ने 'लाल टीन की छत' उपन्यास में अकेलापन का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है।

निर्मल वर्मा ने 'रात का रिपोर्टर' में राजनैतिक विसंगतियों के शिकार एक बुद्धिजीवी रिपोर्टर रिशी के द्वारा अपने आंतरिक संकट और इस संकट के कारण स्वयं अपने जीवन और अपने निकटतम व्यक्तियों के साथ अपने संबंधों के पुनरवलोकन और पुनर्मूल्यांकन की कहानी प्रस्तुत की है।

व्यवस्था और स्वतंत्रता का परस्पर विरोध और तनाव आज के युग की मूल समस्या है। इस उपन्यास के सभी पात्र अकेलेपन से त्रस्त हैं। इस उपन्यास में रिशी अपनी पत्नी उमा के प्रति उदासीनता का व्यवहार करते हैं। शायद उमा के पागलपन का कारण पति द्वारा अपने तिरस्कार की भावना है। रिशी को यह अनुभव होता है किः- "नहीं, यह पागलपन नहीं, दुख है जो चारों तरफ भटकता रहता है।"[25]

रिशी उमा की मानसिक व्यथा का स्रोत व्यक्त करते हुए अपने मित्र हॉलबाख से कहता है- "वह बीमार नहीं है हॉलबाख " "मैं उसकी बीमारी हूँ... क्या तुम दूसरे को अपनी बीमारी से अलग रख सकते हो?"[26] उमा की उलझनों का उसकी मानसिक व्यथा का स्रोत अकेलेपन के कारण उत्पन्न पति-पत्नी का संबंध है।

'रात का रिपोर्टर' उपन्यास के दूसरे पात्र रिशी की प्रेमिका बिंदु भी अकेलेपन का शिकार है। बिंदु को लगता है कि रिशी और उसके बीच एक फासला है जो दोनों की दुनिया को छूने तो देता है परंतु बहुत नज़दीक नहीं देता। बिंदु को हमेशा अनुभव होता है कि रिशी के साथ होने पर भी वह रिशी से कुछ नहीं पाती- "मैं तुम्हें तो जानती हूँ... यह क्या कूछ भी नहीं है? हज़ारों लोग अस्पतालों में रहते हैं; लेकिन वह... रिशी, मैं तुम्हें समझा नहीं सकती। लेकिन जब मैं अकेले में होती हूँ, तो अचरज होता है कि मैं तुम्हारे साथ हूँ और कुछ भी नहीं कह सकती...।"[27]

निर्मल वर्मा पश्चिम के प्रभाव से उत्पन्न आधुनिक जीवन के अकेलेपन के साथ व्यक्ति के आंतरिक जीवन के यथार्थ का अनुपम कथाकार है। इनके प्रसिद्ध उपन्यास 'अंतिम अरण्य' में वृद्ध मेहरा साहब की यातना की कारुणिक एवं मार्मिक यात्रा मृत्युक्षण की अनबूझ गहरी अनुभूति की अभिव्यंजना है। उपन्यास में चित्रित सभी पात्र अंतर्मन में छिपे हुए द्वंद्वात्मक शोरगुल के शिकार हैं अतः अस्वस्थ हैं। पात्रों के अकेलेपन का यह अहसास उनकी अपूर्णता के बोध की उपज है।

अकेलापन दूर करने का प्रत्येक का साधन अलग अलग है। 'अंतिम अरण्य' का निरंजन बाबू अपने घर से सैकड़ों मील की दूरी पर सेब के बगीचे फलाने फुलाने में अपने मन को रिझाने का प्रयास करते हैं। निरंजन बाबू ने कहाः- "सेबों का सीज़न खत्म हो जाते हैं... मैं अपने को अचानक बिलकुल बेकार पाने लगता हूँ। न यहाँ रहने की इच्छा होती है, न नीचे जाने की... कभी-कभी मुझे लगता है, इस शहर में लोग जीने नहीं आते... इंतज़ार करने आते हैं।"[28]

अपनी भूमि, अपना देश छोड़ आयी अन्ना जी पियानो के सुरों में अपना अकेलापन भूलने का प्रयास करती है- "वह कभी कभी अपने फाटक के सामने दिखाई दे जाती है... तो भीतर बुला लेती हैं, किसी दिन जब उनका मूड होता है, तो पियानो बजाती है... वे सबसे अच्छे दिन होते हैं।"[29]

नैरेटर अपने खालीपन के एहसास को मिटाने, मार्ग खोजते हुए इस पहाड़ी प्रदेश में पहुँचा है। नैरेटर अपनी भरी पूरी जवानी में यहाँ आया है।

मेहरा साहब के साथ रहकर क्या उसे खालीपन नहीं लगता इस सवाल को सुनकर आश्चर्य होता है- "वह कौन से खालीपन की बात कर रही है। साथ रहने का खालीपन क्या साथ रहते हुए पता चलता है? माँ बाप का होना न होना एक जैसा ही लगता था... पीछे उनका घर मेरे पास रह गया था, जो अब खाली था। खाली तब भी जान पड़ता था, जब वे साथ रहते थे।"[30] इसीलिए नैरेटर को स्टेट्समन में छपा वह विज्ञापन अकेलेपन से मुक्ति पाने का एक अच्छा अवसर था।

'अंतिम अरण्य' के पात्र जैसे- मेहरा साहब, अन्ना जी, तीया, निरंजन, डॉक्टर और नैरेटर वे सब अकेले हैं जो अपने अतीत के कारण उतने नहीं, जितने अपनी नियति के कारण। उनका अकेलापन किसी परिस्थिति विशेष के कारण नहीं बल्कि उनके अस्तित्व के कारण। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि निर्मल वर्मा अपने उपन्यासों में अकेलेपन को सर्वाधिक त्रासद मानव स्थिति मानते हैं। इसी कारण से निर्मल वर्मा मानवीय स्तर पर व्यक्ति के मूलभूत अकेलेपन के कथाकार माने जाते हैं।

5.3 अस्तित्व की तलाश

आधुनिकता का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू है अस्तित्व की तलाश। निर्मल वर्मा ने अपने उपन्यासों में विभिन्न पात्रों के माध्यम से इसी अस्तित्व की तलाश का सफल चित्रण किया है। निर्मल वर्मा के उपन्यासों के पात्र अपने अस्तित्व के प्रति बेहद सतर्क हैं और इधर-उधर भटकते हुए हैं। ये प्रात्र अपने अस्तित्व के प्रति अतिशय सचेतता प्रकट करते है जो उन्हें दूसरों से अलग कर

देती है। इस कारण वे निरंतर जटिल से जटिलतर होते जा रहे जीवन संदर्भों के बीच अपनी निरर्थकता का अनुभव करते हैं। यह निरर्थकता-बोध उस समय और अधिक गहरा जाता है, जब कहीं किसी परिवर्तन की संभावना भी दिखाई नहीं देती हो। निर्मल वर्मा ने अपने उपन्यासों में इसी निरर्थकता बोध को अलग-अलग संदर्भों में व्यक्त किया है।

इसी कारण 'एक चिथड़ा सुख' की बिट्टी अपने अस्तित्व के प्रति सचेत और अपनी पहचान बनाये या अस्तित्व रक्षण के लिए अपना घर छोड़कर दिल्ली आती है और अपने अंदर की लड़की को खोजने का प्रयास करती है। अपने को खोजने, पाने की तड़प इनमें है-

"वह तुम्हें बहुत मानती थी।"

"मुझे नहीं... वह लड़की कोई और थी।"

"और तुम... तुम कौन हो?"

"मैं"- उसने बहुत धीमे से कहा। "मैं उसे ही ढूँढ़ने दिल्ली आयी थी।"[31]

बिट्टी अपनी ज़िंदगी का अर्थ ढूँढ़ने के लिए दिल्ली आयी। इलाहाबाद छोड़ते समय उसने सोचा था कि वह छोटी छोटी चीज़ों के घेरे से बाहर आ जायेगी। लेकिन बिट्टी को लगा कुछ भी बदला नहीं- "इन दो सालों मैंने कितने पार्ट खेले हैं... मैं दूसरों की ज़िंदगी जीती हूँ, लेकिन खुद वही हूँ जहाँ पहले थी... पहले से भी बदतर, इलाहाबाद में थी, तो कम से कम बहाना तो

नहीं करती थी कि मैं कुछ हूँ।"[32] यहाँ पर अपने स्वतंत्र अस्तित्व को बनाए रखने के लिए बिट्टी प्रयत्नशील है।

'अंतिम अरण्य' के नैरेटर जब अखबार में विज्ञापन पढ़कर मेहरा साहब के यहाँ पहुँचता है तो वह किसी नौकरी की तलाश में नहीं बल्कि एक ऐसे स्थान पर रहने के लिए जहाँ वह अपने वास्तविक स्व को पा सके। उपन्यास का नैरेटर अपनी ही दुनिया में अपने को दुबारा पाने के प्रयत्न में कटे और ठहरे हुए इस पहाड़ी कस्बे में आता है। नैरेटर कहता है- "मैं जीवन के एक ऐसे दौर से गुज़र रहा था, जिसे कुछ लोग क्राइसिस ऑफ मिडिल एज कहते हैं। यह मैं अब सोचता हूँ। मैं उससे बाहर निकलना चाहता था। अब हँसी आती है, क्या कोई अपने तन की त्वचा और मन की मैल से बाहर आ सकता है? कहीं भी जाओ, ये दोनों चीज़ें पीछा नही छोड़तीं। लेकिन एक बात मैं जानता हूँ, यहाँ आने का मतलब एक दुनिया को छोड़कर दूसरी दुनिया में जाना नहीं था, यह अपनी ही दुनिया में अपने को दुबारा पाने का प्रयत्न था..."[33]

नैरेटर सरपा में अस्थिविसर्जन करता है तो उसे लगता है कि वह भी एक हद तक अपने से मुक्त हो गया है- या उसने अपने वास्तविक स्व को पा लिया है- "पानी में खड़ा मैं दूर तक जाता हुआ उन्हें देखता रहा, जो कहीं न था, और तब एक क्षण के लिए मुझे लगा, जैसे मैं बहुत हल्का हो गया हूँ, मानो मेरा कोई एक हिस्सा भी उनके साथ बह गया है। मैं जहाँ वापिस लौटूँगा, वह नहीं हूँगा, जो उन्हें अपने साथ लाया था... न वह, जो उनके पास आया था।"[34]

'अंतिम अरण्य' के दूसरे पात्र निरंजन बाबू अपनी पत्नी, संतानें और दर्शनशास्त्र की प्राध्यापकी किसी में भी ऐसा कुछ नहीं जो उन्हें किसी के लिए और किसीको उनके लिए ज़रूरी बनाये- अपने अस्तित्व की तलाश के लिए इस निर्जन पर्वत प्रदेश आ गये हैं। नैरेटर के पूछने पर वे कहते हैं-

"अपना, और किसका? जिस उम्र में लोग यहाँ आते हैं, अपने अलावा और किसका इंतज़ार किया जाता है? इसलिए उन्हें नीचे जाते हुए डर लगता है।"

"डर? किसका?"

"अपने को खो देने का, निरंजन बाबू ने कहा, यहाँ रहकर कम से कम यह भरोसा तो रहता है कि कुछ भी होगा, तो हम मौजूद तो रहेंगे...नीचे शहरों में तो हम अपने को भुलाए रखते हैं, जब तक कोई धक्का देकर हमें जगा नहीं देता।"[35]

'वे दिन' का नैरेटर और रायना दोनों ही अपने अस्तित्व की गहराइयों में एक दूसरे के प्रति आकर्षण महसूस करते हैं। रायना और नैरेटर का प्रेम अस्तित्व की गहन गुफाओं से बाहर आया प्रेम है- जिसमें मधुर प्राकृतिक भूख की तृप्ति का अहसास है। इसी प्राकृतिक भूख और अस्तित्व की वजह से कुछ समय के लिए अपने अपने अकेलेपन से बाहर आते भी हैं और यह भी महसूस करते हैं कि "समय कुछ भी मानी नहीं रखता- अगर हम एक सुलगते क्षण में अँधेरे के बीच उस ताप को पकड़ सकें... यह जानते हुए भी कि वह जीवित नहीं रहेगा और यह जानते हुए भी उसके बुझने के बाद हम फिर दुबारा अपने-अपने अँधेरे में ठिठुरने लगेंगे।"[36]

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास में अस्तित्ववाद की तलाश भिन्न रूपों में मिल जाती है और निर्मल वर्मा इससे सर्वाधिक प्रभावित उपन्यासकार हैं। निर्मल वर्मा के उपन्यासों में अस्तित्व संकट के बोध की अभिव्यक्ति करनेवाले कई उदाहरण देखने को मिलते हैं।

5.4 मृत्युबोध

बीसवीं सदी के पहले से साहित्य में- उस साहित्य में जिसे लौकिक माना जाता है- मृत्यु-चिंतन का जो विषय असामान्य रूप में ही आता था, महायुद्धों के दौर में पश्चिमी दुनिया में, जीवन की अनिश्चितता के कारण वह एक सामान्य कला-विषय हो गया। अस्तित्ववादी साहित्य की तो वह मुख्य पहचान ही बन गया। युद्ध के प्रभाव ने हमारी पराधीनता को और भी दुर्वह बना दिया था, तब भी मृत्यु के अनुक्षण साक्षात्कार का अनुभव हमारे लिए दुरागत था। उससे हमारा परिचय अस्तित्ववादी साहित्य के ज़रिए ही हुआ। निर्मल वर्मा ने अपने उपन्यासों में मृत्यु बोध की स्थिति का मार्मिक चित्र खींचा है।

'वे दिन' युद्धों के भीषण अनुभवों से गुज़रे व्यक्तियों की मानसिकता का उल्लेख करते है। मृत्यु बोध ने जीवन को बेकार साबित कर दिया। रायना वियना और कोलोन के युद्ध के आतंक तथा मृत्यु की घटनाओं में जकड़ी है। लड़ाई में बहुत से लोग मरते हैं। यह अजीब नहीं है। पर अजीब यह है कि लड़ाई के दिनों के बाद प्रेम और मानसिक शांति मर जाती है। रायना ने धीरे से कहा- "कोलोन में हमने कभी नहीं सोचा था कि हम जीवित रहेंगे। मरना तब बहुत पास था और आसानी भी। हम शायद इसलिए साथ रहने लगे थे...

लड़ाई में बहुत लोग मरते हैं- इसमें कुछ अजीब नहीं है... लेकिन कुछ चीज़ें हैं जो लड़ाई के बाद मर जाती है... शांति के दिनों में... हम उनमें से थे।"[37] रायना मानसिक रूप से शांत नहीं है। युद्ध की यादें हमेशा रायना को सताती रहती हैं।

रायना जहाँ-जहाँ जाती है युद्ध की छाया उसका पीछा करती है। युद्ध का प्रभाव उसके व्यवहारों में साफ झलकता है। उनकी मनःस्थिति युद्ध के प्रभावों से निर्मित हुई है। प्राग में इंदी के साथ सैर करते समय मोनेस्टरी की दीवार के गीले पत्थरों पर चाँदनी में चमकते हुए निरीह शब्द को देखकर रायना कहती है-

"वे इसी तरह दीवारों पर लिखते थे... तुमने कभी कैम्प देखे हैं? मेरा मतलब है... जहाँ वे थे। उनकी साइट..."

"कैसे कैम्प?"

"लड़ाई के दिनों में... मरने से पहले वे दीवारों पर लिखा करते थे।"[38] इससे स्पष्ट होता है कि युद्धोत्तर स्थितियाँ रायना की मनःस्थिति का अंग बन चुकी हैं।

'अंतिम अरण्य' की खासियत यह है कि यह केवल आत्मविस्तार का उपन्यास ही नहीं है, बल्कि यह मृत्यु से सीधे-सीधे साक्षत्कार का उपन्यास है। हिन्दी के उपन्यासों में मृत्यु का ऐसा साक्षात्कार दुर्लभ भी है। यातनापूर्ण जीवन जीने की पीड़ा और मृत्यु की प्रतीक्षा इस उपन्यास का विषय है। यह उपन्यास जीवन, बुढ़ापा और मृत्यु जैसे दार्शनिक विषयों से संबंधित है।

मिस्टर मेहरा साहब नामक बूढ़ा आदमी 'अंतिम अरण्य' उपन्यास का प्रधान पात्र है। अपने आसपास की पहचानों को धीरे-धीरे एक एक करके छोड़ते अपने एक-एक बंधन को हल्के हाथों से खेलते, मृत्यु की ओर एक-एक कदम आगे बढ़ते मेहरा साहब को देखकर महसूस किया जा सकता है कि एक आदमी का मरना क्या होता है- "मृत्यु कोई समस्या नहीं है, अगर तुमने अपनी ज़िंदगी शुरू न की हो। लगता है, तुम कितनी आसानी से वहाँ लौट सकते हो, जहाँ से तुम आए हो। तुमने देखा होगा, जितनी आसानी से युवा लोग आत्महत्या कर लेते हैं, बूढ़े लोग नहीं... वे जीने के इतने अभ्यस्त हो चुके होते हैं कि उससे बाहर निकलना दूभर जान पड़ता है। मौत से ज़्यादा खौफ़नाक यह बात है कि तुम कभी मरोगे नहीं, हमेशा के लिए जीते जाओगे! है न भयानक चीज़?।"[39] इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि मेहरा साहब मृत्यु से भयभीत नहीं है।

पत्नी दीवा की मृत्यु के बाद जीवन से वीतराग हो चुके मेहरा साहब का धीरे-धीरे एक-एक कदम मौत की ओर बढ़ना उनके नौकर मुरलीधर के साथ हुई बातचीत से स्पष्ट है -

"क्यों... क्या मेरा वक्त आ गया है, मुरलीधर..."

"हाँ आता है... जब बीबी गयी थीं, तो क्या सबने उसके जाने की आवाज़ नहीं सुनी थी? तुमने कितनी मनौतियाँ माँगी थीं... कुछ बना?"[40]

निर्मल वर्मा का 'अंतिम अरण्य' में मृत्यु में अर्थ खोजने का प्रयास करते हैं। उनका कहना है आदमी मरकर बोझ रहित, मुक्त हल्का हो जाता है-

"आदमी मृत्यु के बाद दो बार मुक्त होता है, पहली बार दूसरों से, दूसरी बार स्वयं अपने से... मेहरा साहब अपने अस्थि-पिंजर से इस तरह बाहर निकल आए थे- जैसे कोई आदमी अपने जलते घर से बाहर निकल आता है, हल्का, मुक्त, बदहवास..."[41] नैरेटर शायद मेहरा साहब में अपने पिता की शक्ल देखता है, बीस साल पहले वह जिनकी अस्थियाँ कनखल में सिरा चुका है। नैरेटर मेहरा साहब के मरने में अपने पिता का मरना देखता है।- "तब मैं मुश्किल से अट्ठारह वर्ष का रहा हूँगा, जब हम पहला प्रेम करते हैं, और मैंने मृत्यु को पहली बार देखा था- एक निकट प्राणी को इतनी निकट से। और जब बीस वर्षों की विकट भूल-भुलैया से बाहर निकलकर उस पराए शहर में एक बार फिर उसके सामने आ खड़ा हुआ था, जिसने एक दिन मुझे इतना निरीह और अरक्षित बनाकर छोड़ दिया था।"[42]

मृत्यु की वास्तविकता के प्रति डॉ.सिंह के शब्दों में यह स्पष्ट होता है। डॉ.सिंह कहते हैं- "नॉर्मल कुछ भी नहीं होता... पैदा होने के बाद के क्षण से ही मनुष्य उस अवस्था से दूर होता जाता है, जिसे हम नॉर्मल कहते हैं... नॉर्मल होना देह की आकांक्षा है, असलियत नहीं।"[43] आगे वे बड़ी स्पष्टता के साथ कहते हैं- "देह का अंतिम संदेश सिर्फ मृत्यु के सामने खुलता है, जिसे वह बिल्ली की तरह जबड़ों में दबाकर शून्य में अंतर्ध्यान हो जाती है... जैसे एलिस के सामने चैशायर बिल्ली गायब हो जाती थी... सिर्फ उसकी मुस्कुराहट दिखाई देती रहती है।"[44] डॉ.सिंह मेहरा साहब के निजी डॉक्टर है, जीवन देह और मृत्यु पर उनकी यह टिप्पणी इस नाते भी महत्वपूर्ण है।

यातना भी एक यात्रा है मरने के इंतज़ार की यात्रा। दीवा अपने पति से पीड़ा के अंत के लिए धक्के से कुएँ में गिराने की भीख माँग रही थी। स्मृति के धक्के खाते मेहराजी कह रहे हैं- "तुम मेरा सुख चाहते हो? मुझे लगा, यह उनकी आवाज़ न होकर कहीं कुएँ के तल से आ रही है, अगर तुम मुझे चाहते हो, तो मुझे धक्का दे दो, बस हल्का सा, बाकी मैं कर लूँगी! वह जो आज तक मुझे अपनी पीड़ा से बचाती आई थीं, अब उससे छुटकारा पाने के लिए मुझसे भीख माँग रही थीं।"[45]

जाने-अनजाने दीवा भी अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा में हैं। इस प्रतीक्षा की भयावहता का भरपूर अहसास उन्हें है। वे अन्ना के साथ बातचीत करते समय अपना संकट व्यक्त करती हैं- "मुझे कभी कभी डर लगता है... क्रिश्चियन होने से? मैंने पूछा... नहीं, वह बोलीं, अगर उन्होंने मुझे कब्र में दफ़ना दिया और मेरे भीतर जान बची हो? मैं चाहती हूँ कि मुझे ज़मीन में गाड़ने से पहले थोड़ा सा जलाया जाए, ताकि अगर जीवित हूँ, तो थोड़ी-सी जलन लगते ही उठ खड़ी हूँ... एक बार कब्र के भीतर गई, तो कोई मेरी आवाज़ भी नहीं सुन सकेगा... कैसी पागल थी...?"[46]

'एक चिथड़ा सुख' उपन्यास में डैरी बिहार के जंगलों में मृत्यु को निकट से देख चुका है। इसलिए उसे मृत्यु का बोध है। बिट्टी को बताते हुए डैरी कहता है- "तुमने कभी किसीको मरते हुए देखा है? डैरी ने एक साँस ली और उसमें बहुत पुरानी दुपहर की तितीरी आत्मा झलक आयी, मरना नहीं, किसी को मारकर मरते हुए देखना... देखोगी, तो मालूम होगा..."[47]

'एक चिथड़ा सुख' के पुरुष पात्रों में मुन्नू प्रमुख है। वह बिट्टी का कज़िन है। मुन्नू की माँ अस्पताल में कैंसर की बीमारी से मरी थीं। बरसाती में लेटे हुए मुन्नू अपनी माँ की मृत्यु का वक्त इस प्रकार सोचता है- "वह आँखें खोल देतीं, एकटक दरवाज़े की ओर देखती रहतीं जैसे किसी की बाट जोह रहीं हों ... कैसी कोशिश... वह कहाँ जाने की कोशिश करती थीं , कहाँ जाकर लौट आती थीं? दिन और रात के बीच ज़रूर कोई ऐसा लमहा आता होगा, जहाँ वह निढाल होकर रुक जाती होंगी, पीछे देखती होंगी, कोई आ तो नहीं रहा? वह वाट जोह रही थीं। वह आँखें मूँदें लेटी रहतीं और हम सोचते वह सो रही हैं।"[48]

निर्मल वर्मा ने 'एक चिथड़ा सुख' के बुखारग्रस्त मुन्नू के माध्यम से मृत्यु और जीवन के तनावपूर्ण आत्मीय रिश्तों को दिखाया है। मुन्नू की मृत्यु संबंधी जिज्ञासाओं और व्याकुलताओं को हम इन उद्धरणों से समझ सकते हैं- "कभी कभी मुझे एक सुखद आशा बाँधती है, कि मेरे मरने के बाद भी आप जीवित रहेंगे। यह कोई अनहोनी घटना नहीं होंगी, अनेक बाप अपने लड़कों को घाट तक पहुँचा आते हैं।"[49] "डरिए नहीं, यह गुज़रा हुआ समय है और मैं बहुत पहले मर चुका हूँ और आप असली दुनिया में नहीं, मेरी डायरी पर चल रहे हैं।"[50] "देखना तभी खत्म होता है, जब मरना होता है, और मरने पर भी आँखें खुली रहती हैं- जैसे माँ की आँखें थीं- काँच के दो कंचे- जिन पर दुनिया एक पथरायी छाया की तरह चिपकी रहती है..।"[51]

'लाल टीन की छत' की काया ने छोटी सी उम्र में ही ज़िंदगी और मृत्यु का साक्षात्कार कर लिया है- जैसे गिन्नी की मृत्यु, मृत शिशु का जन्म और मिस जोसुआ की मृत्यु। ये तीनों अनुभव काया को सताते रहते हैं लेकिन समझ नहीं पाती। उसका मानना है, गिन्नी मरी नहीं, उसे बुलाया गया है, गिन्नी(बिल्ली) की मौत के बारे में जब छोटे काया से प्रश्न करता है तो वह कहती है– "हुआ कुछ भी नहीं छोटे..." मैं रेल की पटरी के पीछे खड़ी थी... दूसरी तरफ झाड़ियाँ थी और वे हिल रही थीं। मैंने उन्हें हिलते हुए देखा था। फिर-फिर मुझे लगा, कोई बुला रहा है, और मैंने वह बुलाना सुना था।"[52]

काया मिस जोसुआ की मृत्यु के संबंध में यों सोचती है- "मैं नीचे आयी, तो भी देर तक मुझे पता नहीं चल सका कि मिस जोसुआ नहीं रहीं। मुझे विश्वास नहीं हो सका कि ऐसे दिन, जब धूप फैली हो, आकाश इतना नीला हो, कोई मर सकता है।"[53] 'लाल टीन की छत' की मिस जोसुआ भी मौत का इंतज़ार कर रही है। मिस जोसुआ के शब्दों में- "तुम लोगों ने सिमिट्री देखी है- सजौली के पास, जहाँ तुम्हारे अंकल रहते हैं? मैं वहीं जाऊँगी।"[54]

आधुनिक युग में जीनेवाले व्यक्तियों के मृत्यु संबंधी चिंतन, अपने निकटस्थ व्यक्तियों की मृत्यु का साक्षात्कार, मृत्यु को आमने सामने उपस्थित महसूस करनेवाले व्यक्ति की मानसिकता आदि का चित्रण निर्मल वर्मा ने अपने उपन्यासों में बड़ी सूक्ष्मता से किया है। निश्चय ही यह मृत्यु-बोध आधुनिकता के बोध की गवाही देता है।

5.5 महानगर बोध

निर्मल वर्मा के उपन्यासों में पाश्चात्य संस्कृति, विदेशी जीवन आदि को बड़ी गहराई से चित्रित किया गया है। उनके उपन्यासों में महानगर में जीनेवाले व्यक्ति की मानसिकता, समस्याएँ - जैसे अकेलापन, अपरिचय, तटस्थता, कृत्रिमता, व्यर्थता-बोध, बेरोज़गारी और पालतूपन आदि को पूरी सफलता से चित्रित किया गया है। नगरीकरण ने जीवन को खोखला बना दिया है और जीवन को बहुत तेज़ और संघर्षपूर्ण बना दिया है। महानगर संस्कृति में गति ही जीवन है अलगाव की अनुभूति महानगरीय जीवन जीनेवाले व्यक्ति को मानसिक रूप से बीमार बनाने के लिए पर्याप्त है।

औद्योगिक प्रगति के कारण परंपरागत मूल्यों और नैतिकता की अवधारणाएँ परिवर्तित हो गईं, इससे उत्पन्न नई दृष्टि ने श्लीलता-अश्लीलता के प्रश्न को नया रूप दे दिया। 'वे दिन' उपन्यास में निर्मल वर्मा महानगरीय जीवन के साथ जुडी नयी विचार दृष्टि का उदाहरण इस प्रकार देते हैं- "वह बुरा नहीं था, लेकिन उसकी प्रेमिकाओं के कारण मुझे अक्सर अपनी शामें बाहर काटनी पड़ती थीं। यों वह मेरे प्रति क्रूर नहीं था- उसने कई बार मुझसे कहा था कि मैं आँखें मूँदकर अपने पलँग पर लेट सकता हूँ, उसे और उसकी साथिन को कोई आपत्ति नहीं होगी। उसने यह भी आश्वासन दिया था कि मैं चाहूँ तो बीच बीच में आँखें खोल भी सकता हूँ, लेकिन इन बातों को न ही कहना बेहतर है।"[55] यहाँ पर नैतिक या सामाजिक मूल्यों के प्रति खास

प्रतिबद्धता नहीं रखनेवाले पात्रों का ज़िक्र हुआ है। निर्मल वर्मा ने महानगरीय बोध से उत्पन्न शिथिलता को यहाँ व्यक्त किया है।

'रात का रिपोर्टर' में बिंदु अविवाहित होने के बावजूद एक विवाहित मर्द के साथ संबंध रखती है– "मेरे घर में आकर रह सकते हो। मेरे पिता इन दिनों बाहर है और माँ कभी नीचे नहीं आतीं। किसी को कुछ पता नहीं चलेगा..."[56] 'रात का रिपोर्टर' का पात्र रिशी सामाजिक मर्यादाओं से विद्रोह करते हुए ज़िंदगी को अपनी संपूर्णता में स्वच्छंद रूप से जीने को लालायित नज़र आता है- "जिस रात उसे बस्तर (Place) जाना था, बिंदु उसके कमरे में ही सोई थी। आधी रात को किसीने दरवाज़ा खटखटाया... देहरी पर माँ की छाँह दिखाई दी।... माँ ने कभी कल्पना भी न की होगी कि कंबल की निर्जीव लोथ के नीचे कोई जीती-जागती लड़की लेटी होगी।"[57] इस प्रसंग में निर्मल वर्मा रिशी के माध्यम से विवाहित पुरुष का अन्य स्त्रियों के साथ संबंध रखने में हीनता नहीं महसूस करते हैं। यहाँ पर बिंदू भी विवाहपूर्व शारीरिक संबंध स्थापित करना गलत नहीं समझती। ऐसी चिंता महानगरीय जीवन का प्रतीक है। इन पात्रों के लिए समाज की मान्यताएँ, परंपराएँ बाधक नहीं हैं।

'वे दिन' उपन्यास में निर्मल वर्मा के पात्र एक उदासीन आत्मलीन और मूल्य निरपेक्ष जीवन जीते लोग हैं। वे पबों और क्लबों में शराब पीकर रात गुज़ारते हैं और खुले आकाश के नीचे चंद स्मृतियों में बंद हैं, भविष्य के प्रति उदासीन बने-बने रहकर वे पूरी तरह वर्तमान में जीते हैं। कुछ ही दिनों की पहचान के बावजूद ये स्त्री-पुरुष आपस में दैहिक संबंध स्थापित करते हैं । 'वे

दिन' का नैरेटर रायना के साथ अपने होस्टल में यौन संबंध के बाद हुई बातचीत में रायना से पूछता है- "क्या तुम्हारे संग अकसर ऐसा होता है... दूसरे शहर में?"

"हाँ... होता है। मैं ज़्यादा दिन अकेले नहीं रह सकती..."[58] रायना इस व्यवहार को अनैतिक नहीं मानती। वह रूढ़िवाद, नैतिकता, ईर्ष्या-द्वेष पछतावे की भावना से मुक्त है क्योंकि समाज की मान्यताएँ, परंपराएँ उनके लिए बाधक नहीं हैं।

निर्मल वर्मा ने 'वे दिन' उपन्यास को एक महानगरीय परिवेश में लिखा है। स्केटिंग-रिंग, क्लब, पब, मोजार्ट का संगीत, बीथोवन की म्यूज़िक, ऑरकेस्ट्रा, नियॉन आलोक, स्क्वॉयर, बियर, वोदका, सिगरेट आदि महानगर बोध को गहराता है। 'वे दिन' उपन्यास में महानगरीय जीवन में बढ़ता अकेलापन और अजनबीपन, व्यर्थता बोध, स्त्री पुरुष प्रेम संबंध, प्रेम के नाम पर वासनाओं की पूर्ति आदि का स्पष्टीकरण भी प्रस्तुत किया गया है। क्लब, बियर, पब आदि यहाँ के लोगों को समय व्यतीत करने का माध्यम है। सिनेमा, नाच, गाना, पीना-पिलाना यह सब उसके व्यक्तित्व का एक बड़ा भाग बन चुका है–

"हम पहली बार कोन्याक एक साथ पी रहे हैं।"[59]

"हम बार बार अपनी मेज़ के पास आकर तोकाई पी लेते थे... मैं वियना में इससे कहीं ज़्यादा पी लेती थी।"[60]

रायना का कथन है- "मैं बचपन से ही पी रही हूँ... जब मैं स्कूल में पढ़ती थी, तब से।"[61]

"हम कहीं भी जा सकते हैं। आज रात मैं इसी तरह घूमते रहना चाहती हूँ।"[62]

"क्या हम रात-भर इसी तरह नहीं नाच सकते?"[63] ये सब महानगरीय परिवेश के सूचक हैं। आधुनिक युग की नारी बंधन युक्त जीवन जीने के बजाय उन्मुक्त जीवन जीना पसंद करती है। यहाँ पर महानगर के लोगों की जीवन रीतियाँ कैसी है? वे क्या करते हैं और उनका सोच-विचार क्या है आदि का चित्रण बड़ी कुशलता से निर्मल वर्मा ने प्रस्तुत किया है।

महानगरों में रहनेवाले, निरंतर भागदौड़ करनेवाले लोग हैं। कभी कभी दिन के कामों के बाद कहीं पबों में या घरों में मिलकर खाते पीते हैं। इसका चित्रण निर्मल वर्मा ने 'एक चिथड़ा सुख'में बिट्टी और उसके दोस्तों के माध्यम से प्रस्तुत किया है- "वह रात को देर से लौटती थी। कभी अकेले कभी दोस्तों के साथ।"[64] स्टूडियो में रिहर्सल खत्म हो जाने के बाद शाम के खालीपन को भरने के लिए- "वे बिट्टी की बरसाती में चले आते, बियर पीते, काफी शोर मचाते और तब तक जमे रहते जब तक बिट्टी उन्हें बाहर नहीं निकाल देती थी।"[65]

महानगरीय जीवन की भागदौड़ के कारण लोगों का खाना भी उल्टा-सीधा भोजन होता है। इस महानगरीय बोध का स्पष्ट उदाहरण 'एक

चिथड़ा सुख' में दिखता है- "रात के समय जब वे आते थे, तो अपने साथ हज़ारों चीज़ें ले आते थे - सलामी, चीज़, सासेजस, बियर, और ब्राउन, डबलरोटी, जो उसे सबसे अच्छी लगती थी।"[66] यहाँ पाश्चात्य संस्कृति का वर्णन देखा जा सकता है। 'एक चिथड़ा सुख' की बिट्टी और दोस्त पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करके महानगर में जिस तरह लोग जीते हैं, जैसे प्रेमियों के साथ घूमना-फिरना, सिगरेट पीना, बीयर पीना, शोर मचाना और साथ-साथ रहना आदि, इसका यथार्थ वर्णन मिलता है।

'रात का रिपोर्टर' में बिंदु का चरित्र रिशी की भांति विशिष्ट है। वह उपन्यास की नायिका है। वह उन्मुक्त विचारों की स्वच्छंद युवती है- "कभी कभी वह सिगरेट पीती थी, जब बहुत परेशान सी हो जाती थी।"[67] बिंदु भरे पूरे घर की युवती है, और माँ-बाप, भाई बहन के रहते हुए वह बड़ी निश्चिंतता से रिशी के साथ अपने कमरे में सोती है। "पिता ऊपरी मंजिल से नीचे आते तो उसकी ओर एक छिपी, झेंपती, झुटपुटी, मुस्कुराहट में देखते हुए निकल जाते; यह जानते हुए कि मैं बिंदु से मिलने आया हूँः न जानते हुए कि मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ।"[68] निर्मल वर्मा ने यहाँ पर महानगरीय शहरी मानसिकता से युक्त जीवन जीनेवाले व्यक्ति का चित्र सजीव रूप से खींचने का प्रयास किया है। युग परिवर्तन के कारण इन्सान की वैचारिकता और मानसिकता में बदलाव आ गया है।

'वे दिन' के मीता को परिस्थितियों ने छोटी ही उम्र में बहुत समझदार बना दिया है। मीता जिसकी उम्र आठ दस साल की ही है लेकिन

व्यवहार में एक वयस्क मनुष्य सा है। वह अपनी अवस्था से ज़्यादा सोचता, देखता और अनुभव करता है- " मुझे यह कुछ अजीब-सा लग रहा था। मैं अक्सर बच्चों की ज़िद्द देखता आया था। जहाँ ज़िद्द न हो, वहाँ बचपन हो सकता है- यह मुझे अस्वाभाविक-सा लगता था।"[69]

निर्मल वर्मा के उपन्यासों में कृत्रिमता, यांत्रिकता, संवेदनहीनता, पुराने मूल्यों के अस्वीकार, स्त्री पुरुष के परिवर्तित संबंध, प्रेम, महानगरीय अलगाव, तटस्थता, व्यर्थता बोध, बेकारी, शराब, पब आदि महानगरीय सभ्यता को तीव्रता से स्पष्ट किया गया है।

5.6 प्रेम के प्रति नवीन दृष्टिकोण

निर्मल वर्मा के उपन्यासों में प्रेम के बारे में नया दृष्टिकोण केवल व्यक्ति संबंधों को ही नहीं मनुष्य की नियति के मार्मिक रहस्यों को भी उद्‌घाटित करता है। 'वे दिन', 'रात का रिपोर्टर' और 'एक चिथड़ा सुख'में किसी न किसी का प्रेम अनिवार्यतः उपस्थित है। पर इसके पारम्परिक रूप के स्थान पर नितांत नवीनता मिलती है। उनके यहाँ प्रेम बंधन न होकर दो हृदयों को जोड़ता है, बाँधता नहीं है। इसलिए निर्मल वर्मा के पात्र परस्पर मिलते हैं और अंत में अलग हो जाते हैं। वे फिर भी जीवन में प्रेम की अनिवार्यता मानकर ही प्रेम करने के साथ ही जीवन की शुरूआत मानते हैं। यह प्रेम ही व्यक्ति के जीवन को एक नया स्वरूप देता है।

'वे दिन' के कथावाचक और रायना के बीच में जो प्रेम संबंध था उसमें भावुकता और आत्मीयता केवल शारीरिक आकर्षण से ज़्यादा अगाध नहीं है जो शारीरिक संबंध के बाद खत्म हो जाता है- "चाह का डर और सुख... न ही डर होता है, न सही सुख- दोनों में बँटा हुआ, दोनों में एक भी नहीं... सूखी गर्म रेत पर एक नंगी, साफ हड्डी-सा चमका हुआ।"[70]

'वे दिन' के 'रायना' और 'इंदी' केवल तीन दिन के परिचय के बल पर दैहिक संबंध स्थापित हो जाता है। दोनों के मन में एक मर्मांतक चाह खिंच आई और वे दोनों यह जानते हुए कि यह सुख क्षण भर का है, उसमें डूब कर एक दूसरे की देह को टटोलने लगे। रायना के अनुसार- "वह सिर्फ होने का सुख था जबकि हमारे बीच कुछ भी नहीं हुआ था।"[71]

केवल चाह की धड़कन ने इन दोनों को बांधा था। इन दोनों के बीच का संबंध स्थाई नहीं, क्षणिक था। इसलिए रायना पिछली रात इंदी के साथ होस्टल में गुज़रे वक्त को भूल जाने के लिए कहती है– "सुनो अब हमें भूल जाना चाहिए। कल के बारे में, हमें कोशिश करनी चाहिए। यह सोचने की हम पहले जैसे ही हैं। मैं शुरू से ऐसा सोचती थी।"[72] यहाँ पर निर्मल वर्मा ने आधुनिक परीवेश में रहने वाली नारी की आधुनिक मनःस्थिति का चित्रण किया है। यहाँ न कोरा प्रेम आकर्षण है, न कोरा सेक्स, बल्कि एक संवेदना का रागात्मक विस्तार है।

"पहली बार मुझे लगा, जैसे इस शाम तक हम दोनों के बीच जो रिश्ता था, वह अब नहीं है। वह बदल गया था, स्वतः और अनायास।"[73] यहाँ

पर निर्मल वर्मा ने नर-नारी संबंधों के बदलाव, आधुनिक मनुष्य की स्थिति और नियति को अधिकतर यौन संबंधों की सक्रियता से संबद्ध करके दिखाया है। इसका उदाहरण आगे भी दिखाई देता है - "उस रात पहली बार मुझे लगा कि एक व्यक्ति दूसरे के लिए अँधेरा है- जैसे वह मेरे लिए थी, मैं उसके लिए। तीन दिन, तीन वर्ष... समय कुछ भी मानी नहीं रखता..."[74] आत्मीयता के स्पर्श ने इस संबंध के स्वरूप को मौलिक रूप से परिवर्तित कर दिया था।

"मेरे संग जो मित्र आते थे, मिसेज़ तानिया अरसे से उन्हें देखती आयी थीं। उनके लिए शायद यह विश्वास करना कठिन था कि मैं हर तीन-चार महीने के बाद किसी नयी अपरिचित लड़की के साथ यहाँ चला आता हूँ।"[75] यहाँ निर्मल वर्मा ने विदेश में पढ़नेवाले भारतीय विद्यार्थियों के प्रेम संबंधी दृष्टिकोण दर्शाने का प्रयास किया है। वे अपने अकेलेपन से छुटकारा पाने के लिए किसी एक लड़की के साथ रहना चाहते हैं। इन दोनों के बीच में अटूट संबंध प्यार, स्नेह ऐसा कुछ भाव नहीं है। निर्मल वर्मा ने यहाँ पर स्त्री-पुरुषों के प्रेम संबंधों में आये नये मोड़ को प्रस्तुत किया है।

'वे दिन' के मारिया और फ्रान्ज़ की प्रेमकथा भी दुखांत है। यहाँ पर भी भावात्मक संबंध का अभाव देखने को मिलता है। फ्रान्ज़ मारिया को अपनी लड़की कहता है– "उसने अपना एक हाथ एक बहुत ही सीधी-सादी लड़की के कंधे पर रखा था। यह मेरी लड़की है।"[76]इसमें अधिकार की भावना तो है प्रेम कम है।

फ्रान्ज़ इतने साल मारिया के साथ रहने के बाद जब अपने देश लौटने जा रहा है वह उसका ज़िक्र मारिया से नहीं करता –

"उसे मालूम है, तुम वापस नहीं आओगे?"मैंने दोबारा पूछा।

"हमने कोशिश की थी" उसने कहा, उसे विसा नहीं मिल सकता।"

"तुम चाहे तो मिल सकता ह" मैंने कहा... "तुम साथ रहते हो।".

"हम सिर्फ साथ रहते हैं। उसने कहा।"[77] उपन्यास के किसी भी पात्र को अपस में संबंध नहीं है, न तो किसीको किसीकी आवश्यकता है।

फ्रान्ज़ मारिया को बिना सूचित किये बर्लिन जाने वाला है, यह बात मारिया को मालूम है किंतु इसका कोई दबाव मारिया पर दिखाई नहीं देता। मारिया और फ्रान्ज़ के प्रेम संबंध में प्रेम का सुख है लेकिन प्रेम का दु:ख नहीं। नैरेटर के पूछने पर– "तुम इस बार फ्रान्ज़ के साथ क्यों नहीं चली जातीं?"

"उसे मेरी ज़रूरत नहीं है..". वह धीरे से हँस दी।"[78]

मारिया फ्रान्ज़ को चाहती है साथ रहती भी है लेकिन फ्रान्ज़ उसके साथ शादी नहीं करता। बर्लिन वह इसलिए नहीं जा सकती क्योंकि फ्रान्ज़ विसा के लिए उससे शादी नहीं करना चाहता। एक स्थान पर नैरेटर के पूछने पर फ्रान्ज़ कहता है- "मेरे चाहने से? तुम चाहते हो, वह विसा के लिए मुझसे विवाह करेगी?"[79] यहाँ निर्मल वर्मा ने यह स्थापित कर दिया है कि फ्रान्ज़ और मारिया के आत्मीय संबंध मित्रता और देह संपर्क में ही नहीं, बल्कि जीवन लक्ष्यों की विलक्षणता और तटस्थता में है।

'रात का रिपोर्टर' उपन्यास में उमा के प्रति रिशी का अनुचित व्यवहार इस बात से स्पष्ट है कि जब उमा अस्पताल में पड़ी हुई होश और दवा की बेहोशी के बीच झूल रही थी तब वह(प्रेमिका) बिंदु के साथ अपना समय व्यतीत कर रहा था। रिशी चाहते हुए भी अपनी पारिवारिक ज़िम्मेदारियाँ नहीं निभा-पाता और बिंदु के साथ तीन साल से प्रेम संबंध रखता है। वह बिंदु से कहता है– "इसका हमारे प्रेम से कोई रिश्ता नहीं: वह हमारी चीज़ है जो मैंने तुम्हारे साथ अर्जित की है; उसे हमसे कोई नहीं छीन सकता।"[80] पत्नी से सुख न मिलने के कारण रिशी बिंदु से प्यार करता है। यहाँ पर निर्मल वर्मा ने बदलते समय में पति-पत्नी, स्त्री पुरुषों के संबंधों में आये परिवर्तन को व्यक्त किया है।

'रात का रिपोर्टर' के नायक रिशी को लगता है कि उसका जीवन बिंदु से प्रेम होने के बाद ही आरंभ हुआ है– "समय वही था जो अब है, सिर्फ तुम जी नहीं रहे थे। जीना तब शुरू होता है, जब प्रेम शुरू होता है। आदमी दुनिया में पहले आता है, जीना बहुत बाद में शुरू होता है, देह के भीतर एक कुण्डली सा करेंट लगता है और भीतर की सारी रोशनियाँ एकसाथ जगमगाने लगती हैं।"[81] बिंदु को लगता है कि रिशी और उसके बीच एक फासला है जो दोनों की दुनिया को छूने तो देता है परंतु नज़दीक आने नहीं देता। इसलिए बिंदु अपने को इस स्थिति में पाती है– "मुझे कभी कभी लगता है, मैं बाहर की दुनिया में वहीं पहूँच रही हूँ, जहाँ अस्पताल के कमरे में वे(उमा) जी रही हैं।"[82] इस उपन्यास में निर्मल वर्मा रिशी की मानवीय स्थिति के माध्यम से प्रेम

के प्रति एक नये दृष्टिकोण की ओर संकेत करता है, जिसके कारण एक विशिष्ट मानवीय स्थिति पैदा होती है।

'लाल टीन की छत' उपन्यास में निर्मल वर्मा ने भारतीय परिस्थिति में प्रेम का नया रूप इस्तेमाल किया है। पत्नी की कमी को पूरा करने के लिए 'काया' के चाचा नथवाली औरत को लाए हैं। नथवाली औरत के लिए बाहर की दुनिया जैसी थी ही नहीं। चाचा ठीक समय पर वहाँ जाते हैं और ठीक समय पर नियमबद्ध ढंग से वहाँ से चले जाते हैं। उन दोनों के संबंधों में कहीं प्रेम या आत्मीयता का भाव नहीं है, सिर्फ व्यावहारिकता है– "उन्हें यहीं आना था, इस कोठरी में उनका बैठना, रात को चाचा का सीढ़ियाँ उतरना यह अनिवार्य सा लगा, जैसे यह हमेशा से होता आया है। जब वह यहाँ नहीं होगी।"[83]

अतः हम देख सकते हैं कि निर्मल वर्मा ने प्रेम को बिल्कुल एक नये दृष्टिकोण से देखा है और प्रेम के विविध रूपों को अपने उपन्यास साहित्य में दर्शाया है। उनके उपन्यासों में विवाहोपरांत प्रेम संबंध, उन्मुक्त जीवन जीने वाले पात्रों, विवाह संस्था को न मानने वाले आधुनिक युवा पीढ़ी वर्ग ओर अन्य पुरुषों के साथ संबंध रखनेवाली आधुनिक नारियों आदि प्रेम के कई पहलुओं को चित्रित किया गया है।

5.7 जिजीविषा

जिजीविषा मनुष्य के अस्तित्व से जुड़ी हुई है। मनुष्य का व्यक्तित्व जिजीविषा से प्रेरित होकर ही कर्म और संघर्ष की ओर प्रवृत्त होता है और वह

क्षमता बोध का परिचय देता है। जिजीविषा ही संपूर्ण मानव शक्ति को उद्‌भाषित करती है। जिजीविषा से ही व्यक्ति यातना, पीड़ा, मृत्यु, अंतर्विरोध आदि की भयावहता से जीवन की व्यर्थता में भी अर्थ खोजते दिखाई देते हैं।

निर्मल वर्मा ने अपने उपन्यासों में ऐसे पात्रों को गढ़ा जिनमें जिजीविषा देखने को मिलती है जो विपरीत परिस्थितियाँ में भी अपना जीवन भरपूर जीते हैं। निर्मल वर्मा के उपन्यासों के पात्र यद्यपि अकेलेपन से त्रस्त अवश्य हैं, पर उनका यह अकेलापन जीवन के प्रति अलगाव प्रकट नहीं करता है बल्कि जीने की अनुभूति उत्पन्न करता है और यह अनुभूति इन पात्रों की जिजीविषा की परिचायक है।

'वे दिन', 'एक चिथड़ा सुख' और 'अंतिम अरण्य' के पात्रों में यह जिजीविषा निहित है। 'एक चिथड़ा सुख' उपन्यास में बिट्‌टी नयी एवं युवा पीढ़ी की प्रतिनिधि है और वह अपनी इच्छानुसार जीना चाहती है। वह थियेटर की ज़िदगी जीने के लिए पुरानी पीढ़ी के विरुद्ध अपना जीवनादर्श तय करती है। बिट्‌टी थियेटर की दुनिया में अस्तित्व की लड़ाई, भीड़ में अकेलेपन की आहट पाकर भी जिजीविषा के चरम तक पहुँचकर ही महानगर में जीने का अदम्य साहस जुटा पाती है - "बिट्‌टी, तुम सब कुछ छोड़कर यहाँ पड़ी हो। किसके लिए? हिंदुस्तान में कितने लोग ऐसा करते हैं?"[84]

बिट्‌टी की जिजीविषा ने उसके दोस्तों को भी आश्चर्य कर दिया - "बिट्‌टी मुझे तुम पर बहुत हैरानी होती है; पता नहीं, तुम कैसे इतनी अकेले

रह लेती हो, सन्यासियों की तरह।''... ''एक बरसाती, किचन, रिकार्डप्लेयर, - इतना सुख-आराम। सन्यासिनें इस तरह रहती हैं?''[85] बिट्टी जो अपने अस्तित्व की तलाश में दिल्ली आई, उसके लिए वह ज़रूरी सुख-सुविधाओं का भी त्याग करने के लिए तैयार हो जाती है। यहाँ निर्मल वर्मा ने नयी पीढ़ी के युवा वर्ग की दृढ़ जिजीविषा का चित्रण किया है।

निर्मल वर्मा नीरव क्षणों के, असफल प्रेम संबंधों के, जिजीविषा के अन्यतम चितेरे हैं। 'वे दिन' की रायना विगत महायुद्ध की दारुण स्मृतियों से आजीवन संत्रस्त रहती है। कुंठा के बावजूद रायना जीवित रहने की लालसा रखती है और यह लालसा ही उसे प्राग ले आती है, वह प्राग में सिर्फ उन चीज़ों को देखने के लिए आतुर थी जो वह पहले अपने पति जाक के साथ देख चुकी थी। इंदी के साथ हुई बातचीत में रायना जाक के साथ फिर जीने की इच्छा प्रकट करते हुए कहती- ''तुम अलग रहते हो और प्रतीक्षा करते हो। किसी खास चीज़ की नहीं, क्योंकि तुम किसी भी चीज़ को पूरी तरह खो नहीं सकते। वह फिर शुरू हो सकती है... जैसे शुरू में हुई थी।''[86] यह जिजीविषा ही रायना को अतीत में भोगे गये घोर दुःख के क्षणों को भूलने के लिए प्रेरित करती है।

युद्धोपरांत जीवन, वर्तमान के प्रति मोह और अतीत को काटकर फेंक देने की स्थिति का चित्रण निर्मल वर्मा ने 'वे दिन' की रायना के माध्यम से किया है। रायना की जिजीविषा आगे भी प्रकट होती है– ''मैं काफी देर तक वियना के बारे में सोचती रही। यह अजीब है, क्योंकि इस बार जब मैं प्राग

आयी थी, मुझे लगा था कि मैं सबकुछ पीछे छोड़ आयी हूँ। तुम्हें हल्का-सा नहीं लगता? ...मेरा मतलब है... जब तुम कहीं बाहर जाते हो। मुझे लगता है यह एक शुरूआत है- मैं इसे समझा नहीं सकती।"[87]

'अंतिम अरण्य' का मेहरा साहब अकेलेपन और घुटन की ज़िंदगी जी रहे हैं। अपने जीवन की सांध्य बेला में आई दीवा को पाने के बाद मेहरा साहब के जीवन में कुछ और पाना शेष नहीं रह जाता है। अंतिम अरण्य के नैरेटर को लगता है जैसे इस यातनापूर्ण जीवन में भी दीवा की स्मृतियाँ मेहरा साहब को जीने का मोह और शांति देता है– "कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि जिसे हम अपनी ज़िंदगी, अपना विगत और अपना अतीत कहते हैं, वह चाहे कितना यातनापूर्ण क्यों न रहा हो, उससे हमें शांति मिलती है। वह चाहे कितना ऊबड़-खाबड़ क्यों न रहा हो, हम उसमें एक संगति देखते हैं। जीवन के तमाम अनुभव एक महीन धागे में बिछे जान पड़ते हैं।"[88]

मेहरा साहब की बेटी तिया के आने पर मेहरा साहब कुछ बदले हुए दिखाई देते थे। वे शामको अपनी बेटी तिया के साथ सैर के लिए निकलते तो उन्हें देखकर कोई नहीं कह सकता था कि उनपर उम्र का बोझ है, या बीमारी की कोई आशंका है। मेहरा साहब के जीवन में आये इस परिवर्तन के बारे में नैरेटर कहते हैं– "उन दिनों मेहरा साहब को देखकर लगता था कि जो अतीत उनकी पत्नी के साथ कब्र में दब गया था, उसीका एक हिस्सा तिया के साथ लौट आया था। मैं जब कभी उन्हें अपनी खिड़की से बाहर लॉन के पेड़ों के नीचे चलता हुआ देखता, तो लगता, जैसे बाप-बेटी किसी दूसरे ज़माने से

उतरकर घड़ी-दो घड़ी के लिए हमारे शहर आ गए हैं...।"[89] यहाँ निर्मल वर्मा ने बेटी तिया के आने पर मेहरा साहब में जीने की अनुभूति का उल्लेख किया है।

निर्मल वर्मा के उपन्यासों में जिजीविषा तीव्र रूप में परिलक्षित होती है। उनके उपन्यासों में युद्ध की भयानक छाया, गरीबी, बेकारी, घुटन, मृत्यु, भय, अकेलापन आदि विपरीत परिस्थितियों में भी गहरी जिजीविषा दिखाई देती है।

5.8 वैयक्तिक स्वातंत्र्य

स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासों में वैयक्तिक स्वातंत्र्य पर अधिक बल दिया जाने लगा। सामाजिक, नैतिक व धार्मिक परिवेश की अपेक्षा व्यक्ति के स्वतंत्र अस्तित्व की तलाश की ओर आधुनिक औपन्यासिक वस्तु का रुझान बढ़ा। निर्मल वर्मा के उपन्यासों के पात्र सामाजिक परिवेश की अपेक्षा वैयक्तिक परिवेश में ही अस्तित्व का अर्थ पाना चाहते हैं। निर्मल वर्मा के 'वे दिन','एक चिथड़ा सुख' आदि उपन्यासों में वैयक्तिक स्वातंत्र्य की भावना समस्त प्राचीन धारणाओं एवं व्यवस्थाओं को नकारते हुए अस्तित्वगत स्वतंत्रता के रूप में प्रतिष्ठित हुई है। निर्मल वर्मा ने व्यक्ति स्वतंत्रता की खूब वकालत की है।

निर्मल वर्मा के उपन्यास 'एक चिथड़ा सुख' के आरंभ में ही हमें बिट्टी के वैयक्तिक स्वातंत्र्य का परिचय मिलता है। बिट्टी का व्यक्तित्व इतना क्रांतिकारी है कि वह पुराने परिवार के बंधनों में बंध नहीं पाती और वह अपने इच्छानुसार रिक्त ज़िंदगी जीने के लिए अपने घर छोड़ने को तैयार होती है।

बिट्टी का स्वतंत्र व्यक्तित्व मुन्नू के पिता भी पहचान गए थे क्योंकि उन्होंने मुन्नू से यह कहकर भेजा है– "देखो, तुम बिट्टी के घर जा रहे हो, वहाँ सबसे अलग रहना। बिट्टी की अपनी ज़िंदगी है, अपने दोस्त- वहाँ ऐसे रहना, जैसे तुम हो ही नहीं।"[90] उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व की झलक यहाँ पर भी स्पष्ट है- - "मैं दिल्ली छोड़ना चाहती हूँ," "क्या इलाहाबाद लौट जाओगी?".. "नहीं... वहाँ नहीं।"[91] बिट्टी दिल्ली छोड़ना चाहती है लेकिन अपना घर इलाहाबाद लौटना नहीं चाहती।

बिट्टी मदर टेरेसा की तरह दूसरों का दुःख बाँटना चाहती है। वह चाहती है कि सबकुछ तजकर गरीबों में चली जाय। पर जा नहीं पाती। बिट्टी कहती है– "मुझे कोई तकलीफ नहीं है- बरसाती, किताबें, रिकार्ड प्लेयर, मेरे पास सबकुछ है। मुन्नू, गरीबी का बहाना वही करते हैं, जो असल में गरीब नहीं हैं। मेरे पास सबकुछ है, सिर्फ शर्म नहीं है।"[92] बिट्टी में आत्मविश्वास है और इसीलिए उसका व्यक्तितव स्वंतत्र है । इसी तरह 'एक चिथड़ा सुख' का दूसरा प्रात्र इरा में भी वैयक्तिक स्वातंत्र्य का स्पष्ट स्वरूप देखा जा सकता है। वह लंदन में रहती है और नित्ती भाई से प्रेम करती है और इसलिए उसके पीछे हिंदुस्तान आई है। वह पुनः विदेश लौट जाना चाहती है और इस वैयक्तिक स्वातंत्र्य ने उसे मुन्नू द्वारा नित्तीभाई के यहाँ चिट्टी पहूँचा दी है, जिसका परिणाम नित्तीभाई की आत्महत्या में होता है।

पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के कारण सामाजिक बंधनों की शिथिलता और स्वतंत्र चिंतन के कारण मानव व्यक्तित्व में आए परिवर्तन को

निर्मल वर्मा ने 'वे दिन' उपन्यास में प्रस्तुत किया है। 'वे दिन' की नायिका रायना सामाजिक संबंधों को नकारकर व्यक्ति की स्वतंत्रता के धरातल पर जी रही है। रायना अपना देश छोड़कर नए नए शहर में घूमती, खुले आम शराब और सिगरेट पीती, अन्य पुरुषों के साथ प्रेम-यौन संबंध स्थापित करती है। रायना और नैरेटर सभी सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों को नकारते हैं। उनकी अपनी अभिव्यक्ति ही उनके जीवन का चरम लक्ष्य है। नैरेटर और रायना के बीच हुई बातचीत में रायना का स्वतंत्र विचार स्पष्ट है–

"क्या तुम्हारे संग अकसर ऐसा होता है... दूसरे शहरों में?"

"हाँ... होता है। मैं ज़्यादा दिन अकेले नहीं रह सकती..." उसका स्वर स्थिर था।"[93]

'रात का रिपोर्टर' में निर्मल वर्मा ने स्वतंत्रता का प्रबल समर्थन किया है। यह उपन्यास आपातकाल में आम आदमी की स्वतंत्रता के हनन को आधार भूमि बनाकर रचा गया है। 'रात का रिपोर्टर' की बिंदु भी एक स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता रखनेवाली युवती है। बिंदु अपनी पसंद की ज़िंदगी जीने के लिए परंपरागत मूल्यों, मान्यताओं और बंधनों को नकारती है। वह अविवाहित होने पर भी विवाहित रिशी के साथ शारीरिक संबंध स्थापित करती है। 'रात का रिपोर्टर' की नायिका बिंदु की वैयक्तिक स्वतंत्रता हमें यहाँ देखने को मिलती है–

"तुम अपने घर में कहोगी? वे तुम्हें बाहर रहने देंगे?"

"उसकी फिक्र मत करो ! मैं वैसे भी तो दिल्ली के बाहर जाती हूँ... उन्हें पता भी नहीं चलेगा कि मैं..."[94] बिंदु अपने घर में बताये बिना विवाहित रिशी के घर में रहने को तैयार हो जाती है।

'अंतिम अरण्य' के मेहरा साहब की बेटी तिया का यह कथन व्यक्तिगत स्वतंत्रता का संकेत करता है - "मेरी ज़िद होती, तो यहाँ कभी नहीं आती ! उन्हें दूसरे लोगों पर छोड़ देती..."[95]

'अंतिम अरण्य' में लेखक मेहरा साहब की पत्नी दीवा की मृत्यु के बाद भी अन्य लोगों के कहने के बावजूद मेहरा साहब को अकेले छोड़कर नहीं जाता है। लेखक के शब्दों में- "उनकी जगह कौन ले सकता है? जबसे वह नहीं रही, मैं अपने को गलत जगह पर पाता हूँ... कभी-कभी तो मुझे समझ में नहीं आता, मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ?"[96] यहाँ पर निर्मल वर्मा ने इन स्थितियों के माध्यम से व्यक्ति की एक ऐसी स्वतंत्रता का उल्लेख किया है जो उसे संबंधों में बाँधकर सीमित न कर पाये। निर्मल वर्मा ने इन पात्रों के माध्यम से अपनी नियति स्वयं जीते हुए व्यक्तियों के वैयक्तिक स्वातंत्र्य को प्रस्तुत किया है।

आधुनिक मनुष्य पारंपरिक मूल्यों से मुक्त अपने इच्छानुसार जीवन चुनने के लिए स्वतंत्र है। निर्मल वर्मा के उपन्यासों में व्यक्तिगत इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रयासरत पात्र दिखाई पड़ते हैं। स्वतंत्रता की चेतना से उपजे नैतिक द्वंद्व उनके उपन्यासों में नज़र आते हैं।

निष्कर्ष

आधुनिक हिन्दी उपन्यास साहित्य के विकास में जिन रचनाकारों का योगदान रहा है उनमें निर्मल वर्मा अग्रणी है। निर्मल वर्मा के अधिकतर उपन्यास यूरोपीय आधुनिकता में खोए भारतीय की मुक्ति की गाथा है। उन्होंने उपन्यास के माध्यम से शहरी ज़िंदगी की जटिलता और वास्तविकता को पकड़ने का प्रयास किया है।

उनके उपन्यासों में द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् आधुनिक युग के मनुष्य के जीवन में आई आधुनिकता की प्रक्रिया का उल्लेख हुआ है। इनके उपन्यासों में अस्तित्ववादी दर्शन के कारण व्यर्थता-बोध, मृत्यु-भीति, मृत्युबोध, भय, अर्थहीनता, अजनबीपन और अकेलेपन की मनोवृत्ति देखने को मिलती है। निर्मल वर्मा के उपन्यास साहित्य में पारिवारिक जीवन में व्याप्त संबंध हीनता, स्त्री-पुरूष संबंधों में बदलाव, नैतिक मूल्यों का विघटन, विवाह-संस्था का निषेध, प्रेम, सेक्स आदि समस्याओं को उजागर करने का प्रयास हुआ है।

'वे दिन', 'एक चिथड़ा सुख', 'रात का रिपोर्टर' आदि उपन्यास आधुनिक जीवन का चित्रण करनेवाले उपन्यास हैं। इन उपन्यासों में आधुनिकता, आधुनिक जीवन, आधुनिक जीवन की विसंगतियाँ और आधुनिक वातावरण है। मुक्त जीवन जीनेवाले युवक-युवतियों का अवसाद और आकर्षण, सेक्स की तृष्णा, क्षण के लिए जीनेवाले पात्र आदि का उल्लेख 'वे दिन' में हुआ है जो आधुनिकता बोध का नतीजा है। 'वे दिन' में अकेलापन के साथ जुड़ा व्यर्थता

बोध, खालीपन, तटस्थता, उदासीनता, प्रेम का एक नया रूप और युद्ध की भयंकरता आदि का चित्रण निर्मल वर्मा ने प्रस्तुत किया है।

'एक चिथड़ा सुख' उपन्यास में आधुनिकता की सर्वव्यापी अधीनता और प्रभाव में खोते जा रहे मनुष्य के बुनियादी सुख और उसकी मौलिक इच्छाओं-आकांक्षाओं के बारे में कुछ ज़रूरी सवाल उठाये गये हैं। 'रात का रिपोर्टर' में आधुनिक पारिवारिक जीवन, टूट़ते बिखरते संबंध, आपातकाल के टोटल टेरर और परंपरागत मूल्यों का चित्रण हुआ है।

निर्मल वर्मा ने 'अंतिम अरण्य' में मृत्यु की विभीषिका, स्नेहहीन अकेलापन, स्मृतियों की बेचैन ज़िंदगी और अपराधबोध की घुटन की भीषण यातना की अभिव्यंजना की है जो आधुनिकता के बोध की गवाही है। 'लाल टीन की छत' में भय और आतंक, अकेलापन और सूनापन, अजनबीपन और बेगानापन जैसे आधुनिकता-बोध के लक्षण दिखाई पड़ते हैं।

उक्त विवरण एवं विवेचन के आधार यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि निर्मल वर्मा के उपन्यासों में आधुनिकता बोध के सारे आयाम सिमट आए हैं। आधुनिक जीवन का चित्रण करनेवाले हिन्दी उपन्यासकारों में निर्मल वर्मा का महत्वपूर्ण योगदान है। हिन्दी उपन्यास की विकास-यात्रा में उनका योगदान प्रातः स्मरणीय है।

संदर्भ

1. इंद्रनाथ मदान : समकालीन साहित्यःएक नई दृष्टि, पृ. 60
2. इंद्रनाथ मदान (संपा) : आलोचना, अंक-39, पृ. 20

3. ममता कालिया : हिन्दी उपन्यासः1950 के बाद, पृ. 50

4. निर्मल वर्मा : वे दिन, पृ. 163

5. वही, पृ. 64

6. वही, पृ. 175

7. निर्मल वर्मा : एक चिथड़ा सुख, पृ. 94

8. निर्मल वर्मा : रात का रिपोर्टर, पृ. 110

9. वही, पृ. 36

10. निर्मल वर्मा : एक चिथड़ा सुख, पृ. 50-51

11. वही, पृ. 84

12 निर्मल वर्मा : वे दिन, पृ. 22

13. निर्मल वर्मा : अंतिम अरण्य, पृ. 53

14. वही, पृ. 152

15. निर्मल वर्मा : वे दिन, पृ. 163

16. वही, पृ. 155

17. वही, पृ. 169

18. वही, पृ. 46

19. निर्मल वर्मा : एक चिथड़ा सुख, पृ. 28

20. वही, पृ. 54

21. वही, पृ. 45

22. निर्मल वर्मा :लाल टीन की छत, पृ. 35

23. वही, पृ. 52

24. वही, पृ. 52

25. निर्मल वर्मा : रात का रिपोर्टर, पृ. 36

26. वही, पृ. 93

27. वही, पृ. 56

28. निर्मल वर्मा : अंतिम अरण्य, पृ. 192

29. वही, पृ. 124

30. वही, पृ. 52

31. निर्मल वर्मा : एक चिथड़ा सुख, पृ. 127

32. वही, पृ. 117

33. निर्मल वर्मा : अंतिम अरण्य, पृ. 24

34. वही, पृ. 280

35. वही, पृ. 193

36. निर्मल वर्मा : वे दिन, पृ. 155

37. वही, पृ. 162

38. वही, पृ. 106-107

39. निर्मल वर्मा : अंतिम अरण्य, पृ. 19-20

40. वही, पृ. 174

41. वही, पृ. 240

42. वही, पृ. 260

43. वही, पृ. 100

44. वही, पृ. 100

45. वही, पृ. 66

46. वही, पृ. 37

47. निर्मल वर्मा : एक चिथड़ा सुख, पृ. 116

48. वही, पृ. 123

49. वही, पृ. 133

50. वही, पृ. 133

51. निर्मल वर्मा : एक चिथड़ा सुख, पृ. 86

52. निर्मल वर्मा : लाल टीन की छत, पृ. 56

53. वही, पृ. 194

54. वही, पृ. 25

55. निर्मल वर्मा : वे दिन, पृ. 20

56. निर्मल वर्मा : रात का रिपोर्टर, पृ. 102

57. वही, पृ. 35

58. निर्मल वर्मा : वे दिन, पृ. 160-161

59. वही, पृ. 151

60. वही, पृ. 150

61. वही, पृ. 58

62. निर्मल वर्मा : एक चिथड़ा सुख, पृ. 138

63. वही, पृ. 150

64. वही, पृ. 9

65. वही, पृ. 10

66. वही, पृ. 32

67. निर्मल वर्मा : रात का रिपोर्टर, पृ. 103

68. वही, पृ. 112

69. निर्मल वर्मा : वे दिन, पृ. 34

70. वही, पृ. 137

71. वही, पृ. 111

72. वही, पृ. 142

73. वही, पृ. 155

74. वही, पृ. 155

75. वही, पृ. 38

76. वही, पृ. 45

77. निर्मल वर्मा : वे दिन, पृ. 74-75

78. वही, पृ. 52

79. वही, पृ. 74-75

80. निर्मल वर्मा : रात का रिपोर्टर, पृ. 36

81. वही, पृ. 92

82. वही, पृ. 104

83. निर्मल वर्मा : लाल टीन की छत, पृ. 145

84. निर्मल वर्मा : वे दिन, पृ. 93

85. वही, पृ. 85

86. वही, पृ. 91

87. वही, पृ. 90

88. निर्मल वर्मा : अंतिम अरण्य, पृ. 10-11

89. वही, पृ. 130

90. निर्मल वर्मा : एक चिथड़ा सुख, पृ. 86

91. वही, पृ. 118

92. वही, पृ. 126

93 निर्मल वर्मा : वे दिन, पृ.160-161

94. निर्मल वर्मा : रात का रिपोर्टर, पृ. .55

95. निर्मल वर्मा : अंतिम अरण्य, पृ. 152

96. वही, पृ. 158